कस्तूरबाग्राम रूरल इंस्टीट्यूट,कस्तूरबाग्राम,इंदौर

// आवश्यक सूचना //

सत्रः 2017–18

महाविद्यालय की निम्न कक्षा के विद्यार्थियों को सूचित किया जाता है कि, सत्र 2017–18 में निम्न प्रमाण पत्र पाठ्यकम पढाये जायेंगे। कृपया संबंधित कक्षा के विद्यार्थी अनिवार्य रूप से पाठ्यकम की कक्षा में उपस्थित रहें।

क्र.	पाठ्यकम प्रमाण पत्र का नाम	कक्षा	प्रभारी
01	ग्रामीण हस्तकला	बी.एच.एससी. तृतीय वर्ष	गृह विज्ञान विभाग
02	योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा	बी.ए., बी.एच.एससी, द्वितीय वर्ष एवं तृतीय वर्ष	डॉ.पूनम कौशिक डॉ.कीर्ति यादव
03	बागवानी	बी.ए., बी.एच.एससी, प्रथम वर्ष	श्री गोविंद नागोर
04	जैविक खेती एवं वर्मी कम्पोस्ट	बी.ए., बी.एच.एससी, द्वितीय वर्ष एवं तृतीय वर्ष	श्री गोविंद नागोर

प्रभारी प्राचार्या
प्रभारी प्राचार्य
कस्तूरबा ग्राम रुरल इन्स्टीट्यूट
कस्तूरबा ग्राम, इन्दौर

Scanned with CamScanner

कस्तूरबाग्राम रूरल इन्स्टीट्यूट, कस्तूरबाग्राम, इंदौर

पाठ्यक्रम सत्र 2017–18

कक्षा : समस्त संकाय द्वितीय एवं तृतीय वर्ष

विषयः– ग्रामीण हस्तकला

पाठ्यक्रम प्रमाण पत्र कोर्स

व्याख्यान के कुल घंटे : 60
कुल माह : 05
प्रति सप्ताह व्याख्यान : 03

पाठ्यक्रम अध्ययन की उपलब्धियां :–

1. विद्यार्थियों का हस्तकला के प्रति रूझान बढाना ।
2. पुष्प निर्माण कला के अंतर्गत कृत्रिम पुष्प निर्माण कला सिखाना, पुष्प पात्र सज्जा एवं कृत्रिम आभूषण तथा सजावटी साधनों के द्वारा गृह उपयोगी उपसाधन निर्माण कला सिखाना ।
3. स्वरोजगारों के प्रति जागरूकता का प्रयास करना।

इकाई	विषय विवरण
	– **कृत्रिम आभूषण डिजाइन :** 1. कृत्रिम आभूषण का अर्थ एवं आवश्यकता। 2. चूडियॉं निर्माणयोजना बनाना, आवश्यक सामग्री निर्माण विधि, निर्माण में ावधानियॉं 3. कंगन निर्माण योजना बनाना, आवश्यक सामग्री निर्माण विधि एवं निर्माण में सावधानियां। 4. एयरिंग्स योजना बनाना, आवश्यक सामग्री निर्माण विधि, निर्माण में सावधानियॉं। 5. अन्य आभूषण– साडी पिन, जूडा पिन, 'की' रिंग आवश्यक सामग्री निर्माण विधि एवं सावधानियॉं। 6. निर्मित साधन की लागत निकालना।
	– **कृत्रिम पुष्प निर्माण :** 1. कृत्रिम पुष्प व्यवस्था का अर्थ, उपयोगिता एवं लाभ 2. कृत्रिम पुष्प निर्माण के साधन पुष्प निर्माण हेतु कपडे के प्रकार – अवरगंडी स्टोकिंग (तीन प्रकार) आवश्यक सामग्री निर्माण विधि, निर्माण में सावधानियॉं पुष्प निर्माण हेतु पेपर – क्रेप पेपर, पुराने न्यूज पेपर से फूल बनाना पुष्प निर्माण क्ले के द्वारा आवश्यक सामग्री, निर्माण विधि 3 कृत्रिम बोनसाय – बोनसाय का अर्थ एवं उपयोगिता – कृत्रिम बोनसाय की निर्माण सामग्री – कृत्रिम बोनसाय निर्माण में सावधानियॉं 4. निर्मित साधन की लागत निकालना

अविरत....2

Scanned with CamScanner

	– **कृत्रिम रंग निर्माण** 1. होली के प्राकृतिक रंग तैयार करना। 2. प्राकृतिक रंग का अर्थ 3. रंग के प्रकार – (1) सूखा रंग (2) तरल रंग 4. रंग निर्माण के वनस्पतिक स्त्रोत – नीम, मेंहदी, पोई, टेसू, चूकन्दर, पालक, संतरे एवं नीबू के छिलके 5. निर्माण सामग्री एकत्र करने के तरीके 6. रंग निर्माण की विधि 7. निर्माण में सावधानियॉ 8. उत्पादन का विकय
	– **पुष्प पात्र सज्जा :** 1. पुष्प पात्र सज्जा का अर्थ एवं महत्व 2. पुष्प पात्र सज्जा के साधन– क्ले एवं कलर, पेंट, रेत, कंकरीट एवं रंग से सज्जा मोम, मोती एवं डोरियां, कांच, जरी इत्यादी से पुष्प पात्र सज्जा करने की विधियाँ 3. ओरिगेमी (पेपर वर्क) से पात्र सज्जा
	– **इकाई पंचम – प्लाय या अन्य आधार (एकेलिक शीट, फोम शीट, अनुपयोगी पात्र) पर सजावटी एवं उपयोगी साधनों का निर्माण :** 1. बन्दनवार (दो प्रकार) निर्माण सामग्री, निर्माण विधि एवं सावधानियॉ 2 बहुउद्देशीय रांगोली से तात्पर्य 3 रांगोली निर्माण के साधन – प्लाय, एकेलिक एवं फोम शीट, कलर, कुंदन, मोती, जरी निर्माण विधि एवं सावधानियॉ 4. कलश एवं थाल सज्जा – आवश्यक सामग्री – कलर, कुंदन, जरी, डोरी, मोती, सिरोसक्की आदि 5. निर्माण विधि एवं सावधानियॉ 6. निर्मित साधन की लागत निकालना

Scanned with CamScanner

कस्तूरबाग्राम रूरल इन्स्टीट्यूट, कस्तूरबाग्राम, इन्दौर

// पाठ्यक्रम 2017–18 //

कक्षा : समस्त द्वितीय वर्ष

विषयः– योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा

पाठ्यकम प्रमाण पत्र

व्याख्यान के कुल घंटेः 60
कुल माह : 05
प्रति सप्ताह व्याख्यन :03

पाठ्यकम अध्ययन का उद्देश्य :–

1. योग एवं प्राकृति चिकितसा में विद्यार्थियों को जागरूक करना।
2. योग दर्शन एवं कियाओं को समझना।
3. मानव शरीर पर योग के प्रभावों को जानना।
4. विभिन्न बीमारियों में प्राकृतिक चिकित्सा का महत्व समझना।
5. रोजगार के अवसरों का मिलनां

क्रमांक	विषय विवरण
1.	प्राकृतिक चिकित्सा का अर्थ, आवश्यकता एवं महत्व
2.	प्राकृतिक चिकित्सा के सिद्धांत एवं उपयोग
3.	भारत में प्राकृतिक चिकित्सा का विकास
4.	स्वास्थ्य एवं प्राकृतिक चिकितसा में संबंध
5.	पंच महाभूत (आकाश, वायु, अग्नि, जल, पृथ्वी)
6.	**प्राकृतिक चिकितसा की विभिन्न विधियां –** a) मिट्टी चिकित्सा b) जल चिकित्सा c) सूर्य किरण चिकित्सा d) उपवास चिकित्सा e) आहार चिकित्सा
7.	वैज्ञानिक मालिश का अर्थ एवं आवश्यकता
8.	एक्यूप्रेशर का अर्थ एवं उपयोग, मुख्य बिन्दु एवं बिन्दुओं का उपयोग।
9.	प्राथमिक चिकित्सा के रूप में एक्यूप्रेशर का उपयोग।
10.	योग एवं प्राथमिक चिकित्सा में संबंध
11.	प्रकृति स्वयं चिकित्सक है
12	योग का अर्थ, परिभाषा एवं महत्व पतंजली अष्टांग योग का संक्षिप्त परिचय
13	मन, शरीर तथा आत्मा तीनों की चिकित्सा योग के माध्यम से
14.	आसन की परिभाषा व प्रकार – ध्यानात्मक आसन, शरीर संवर्धक आसन, आरामदायक आसन
10.	प्राणायम – अर्थ, परिभाषा व महत्व
11	विधि, लाभ एवं सावधानियां – **आसन** – शवासन, मकरासन, वज्रासन, सुखासन, सर्यनमस्कार, ताडासन, वृक्षासन, पद्मासन, पश्चिमोत्तासन, भुजंगासन, शलभासन, धनुरासन **किया** – जल नेति अथवा सूत्र नेति **प्राणायाम** – अनुलोम विलोम, भस्त्रिका

Scanned with CamScanner

कस्तूरबाग्राम रूरल इन्स्टीट्यूट, कस्तूरबाग्राम, इन्दौर

// पाठ्यक्रम 2017–18 //

कक्षा : समस्त संकाय प्रथम वर्ष

विषय :– बागवानी पाठ्यकम प्रमाण पत्र कोर्स

व्याख्यान के कुल घंटे: 60
कुल माह : 05
प्रति सप्ताह व्याख्यान :03

पाठ्यकम अध्ययन का उद्देश्य :–

1. विद्यार्थी बागवानी के संबंध में जानकारी एकत्रित करेंगे।
2. विद्यार्थी पुष्ट डिजाइन नर्सरी प्रबंधन, फल और सब्जी उत्पादन का ज्ञान अर्तित करेंगे।
3. विद्यार्थी स्वरोजगार विकल्प में बागवानी को अपना सकते हैं।
4. विद्यार्थी फल एवं फूल उगाने के लिये बागवानी फार्म या बागवानी नर्सरी को व्यवसाय के रूप में चुन सकते हैं।

क्र.	विषय
	पौधों का परिचय – 1. पौधों का वर्गीकरण करके पौधों की प्रजातियों की पहचान करना 2. विभिन्न फूलों को लेबल लगाना 3. बीज वुवाई एवं फूलों की खेती 4. विभिन्न पौधों की छटाई 5. सब्जियों की खेती – बेंगन, हरी मिर्च, धनिया, भिण्डी, खीरा आदि **मिट्टी और पौधों का पोषण –** 1. मिट्टी और खाद के मिश्रण को तैयार करना 2. बनावट, संरचना और जल संरक्षण का ज्ञान अर्जित करना 3. सजावटी पौधों में होने वाले पोषक तत्वों की कमी का उपचार करना 4. विभिन्न प्रकार के पौधों को कंटेनर में उठाने के लिये मिट्टी के मिश्रण का वर्णन करना। **परिचय एवं प्रचार –** 1. कलम और बीजों पर प्रसार तकनीकों की समझ विकसित करना 2. ग्राफ्टिंग की तकनीक को सीखना **पौधों की पहचान एवं उपयोग –** 1. विभिन्न जलवायू में उगाने के लिये पौधों का चयन करना 2. छाया, हवा एवं सौंदर्य वाले पौधों की पहचान करना 3. सजावटी उद्यान के लिये पौधों का चयन करना **पौधों में विभिन्न कीट एवं रोगों की पहचान –** 1. विभिन्न प्रकार के कीटों, बीमारियों की पहचान करना, उनका वर्णन करना और उन पर नियंत्रण के तरीके सीखना **पौधों की सुरक्षा प्रकियाओं को सीखना –** 1. निंदाई, गुडाई, सिचाई व जैविक कीट नाशक का छिडकाव 2. बाजार भाव ज्ञात करना एवं फसल की बिक्री करना – 3. सम्पूर्ण कार्य विवरण की दैनिक डायरी तैयार करना

Scanned with CamScanner

कस्तूरबाग्राम रूरल इन्स्टीट्यूट, कस्तूरबाग्राम, इंदौर

पाठ्यक्रम सत्र 2017–18

कक्षा : समस्त संकाय द्वितीय एवं तृतीय वर्ष

विषयः– जैविक खेती एवं वर्मी कम्पोस्ट

पाठ्यक्रम प्रमाण पत्र कोर्स

व्याख्यान के कुल घंटे : 60
कुल माह : 05
प्रति सप्ताह व्याख्यान : 03

पाठ्यक्रम अध्ययन की उपलब्धियां :–

1. विद्यार्थियों का जैविक खेती के प्रति रूझान बढाना ।
2. वर्मी कम्पोस्ट का उत्पादन, विधियां सीखना व जैविक खेती में प्रयोग करना।
3. परंपरागत खेती से जैविक खेती की और लौटना।
4. मृदा को उपजाऊ व उपयोगी बनाना।

क्रमांक **विषय विवरण**

1. **जैविक खेती से परिचय –**
   - जैविक खेती क्या है ?
   - जैविक खेती का विकास
   - जैविक खेती के लाभ व उपयोगिता
2. **मृदा –**
   - मृदा निर्माण
   - मृदा विकास व परिवर्तन
   - मृदा के प्रकार
   - जैविक मृदा
   - ऊर्वरकता
   - मृदा जॉच (Soil Testing)
3. **फलस योजना एवं प्रबंधन –**
   - फसल चक्र, अंतर फसल, कवर फसलें
   - पशु सहयोग, खेत का जैविक प्रबंधन
   - पोषक तत्व प्रबंधन
   - खरपतवार प्रबंधन, कीट और रोग प्रबंधन
4. **वर्मी कम्पोस्ट –**
   - परिचय
   - कैंचुए के प्रकार और वर्गीकरण – एपीजीक, एंडोजीक, डाईजीक
   - कैंचुओं का जीवन इतिहास
5. **वर्मी कंपोस्ट उत्पादन –**
   - वर्मी कंपोस्ट एवं वर्मी वॉश इकाई की स्थापना
   - विभिन्न विधियॉ, छोटे बडे पैमाने पर (Bed Method) व (Pit Method)
   - वर्मी कम्पोस्ट का उत्पादन, भंडारण एवं पैकिंग

.....

Scanned with CamScanner